

॥ वैभव लक्ष्मी व्रत कीनियम ॥

॥ जय माँ वैभव लक्ष्मी ॥

Full Disclaimer

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji
"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ संकल्प और शुक्रवार की रीति ॥

कितने शुक्रवार

वैभव लक्ष्मी का व्रत शुक्रवार को रखा जाता है। 11 या 21 शुक्रवार का संकल्प बहुत प्रचलित है; कुछ परिवार अन्य संख्या लेते हैं। आरंभ में उतने शुक्रवार चुनें जिन्हें अपनी परिस्थिति में निभा सकें। छूटे शुक्रवार को कैसे गिनना है, यह अपनी परंपरा के अनुसार तय करें।

पूजा का समय

कई घरों में संध्या को पूजा होती है। घर और पूजा स्थान साफ करें, माता लक्ष्मी तथा श्रीयंत्र का स्मरण करें, कलश और उपलब्ध आभूषण या मुद्रा का प्रतीकात्मक पूजन करें। कथा-पाठ, आरती और प्रसाद वितरण से शुक्रवार की पूजा पूरी करें।

भोजन की रीति

फलाहार, एक समय सात्त्विक भोजन या सामान्य भोजन का चुनाव घर की प्रथा और स्वास्थ्य के अनुसार होता है। इस व्रत में खटाई न खाने का नियम सार्वभौमिक नहीं है; वह संतोषी माता के शुक्रवार व्रत की अलग प्रचलित रीति है।

स्त्री या पुरुष कोई भी श्रद्धा से यह व्रत रख सकता है। संकल्प में ईमानदारी, उचित मेहनत, संयम और दूसरों के प्रति सद्व्यवहार भी शामिल रखें।

॥ स्वास्थ्य और व्यवहार का ध्यान ॥

उपवास में विवेक

गर्भावस्था, मधुमेह, बीमारी, दवा या अधिक शारीरिक श्रम की स्थिति में भोजन-पानी न रोकें। पूजा के लिए कठोर निर्जल उपवास आवश्यक नहीं है। चिकित्सकीय सलाह के अनुरूप भोजन-पानी और दवा जारी रखें।

घर की अलग परंपराएँ

कहीं शुक्ल पक्ष के शुक्रवार को आरंभ किया जाता है, कहीं उपलब्ध शुक्रवार को। श्रीयंत्र, कलश, दीप और प्रसाद की विस्तृत रीति में भी भिन्नता मिलती है। अपनी परंपरा में जो रूप संभव हो, उसे स्पष्ट संकल्प के साथ अपनाएँ।

व्रत का भाव

लक्ष्मी पूजा को जीवन में संसाधनों का जिम्मेदार उपयोग, मेहनत की कमाई और जरूरतमंद की सहायता से जोड़ें। किसी को उपवास के लिए बाध्य न करें; विपत्ति को पूजा में कमी का दंड न समझें।

शुक्रवार छूट जाए तो घबराएँ नहीं। परिस्थिति सँभलने पर घर की रीति के अनुसार शेष संकल्प पूरा करें; संकल्प पूरा होने पर उद्यापन करें।

॥ ॐ श्रीं महालक्ष्म्यै नमः ॥